

गंगा की सांस्कृतिक वरिसत की खोज़ एवं संरक्षण चर्चा में क्यों?

हाल ही में गंगा की सांस्कृतिक वरिसत के संरक्षण के लिये कथि जा रहे प्रयासों के क्रम में केंद्रीय टीम द्वारा इत्र नगरी 'कन्नौज' में प्रयोगत इत्र उद्योग, गट्टा, धार्मिक स्थल, घाट का अध्ययन किया गया।

प्रमुख बातें

- गैरतलब है कि विषय 2019 से केंद्र सरकार के जलशक्ति भित्तिरालय द्वारा गंगा नदी के दोनों कनिरों पर 51 कमी. दूरी तक अवस्थिति पराकृति, स्थापत्य संबंधी एवं अमूरत वरिसतों को संरक्षित करने के उद्देश्य से नमामिगंगा परियोजना के तहत नमामिगंगा सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण परियोजना कर्यान्वयिति की जा रही है।
- नमामिगंगे परियोजना** केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2014 में प्रारंभ की गई एक फ्लैगशपि परियोजना है, जिसका मुख्य उद्देश्य गंगा नदी के प्रदूषण को कम करना एवं गंगा नदी का पुनर्जीवन है।
- इसका कर्यान्वयन **राष्ट्रीय सवच्छ गंगा मिशन** द्वारा किया जा रहा है, जो राष्ट्रीय गंगा परिषद की कर्यान्वयन शाखा है।
- कन्नौज, जसे भारत की इत्र नगरी कहा जाता है, 7वीं सदी में पुष्यभूति वंश के शासक राजा हर्षवर्द्धन की राजधानी थी। इसके लिये बाणभट्ट द्वारा 'महोदय श्री' संबोधन का प्रयोग किया गया है। हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् कन्नौज पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूटों के मध्य त्रिपिक्षीय संघरण का केंद्र बन गया था।